दूध दोहन से जुड़े रोग एवं रोकथाम

थनैला (मैस्टाइटिस)

- लक्षण: थन में सूजन, गर्मी, दूध में थक्के।
- रोकथाम: स्वच्छ दोहन, पूरा दूध निकालना, समय पर उपचार।

किसानों के लिए लाभ

- दूध उत्पादन में वृद्धि।
- दूध की गुणवत्ता बेहतर।
- पशु स्वस्थ एवं दीर्घायु।
- बाजार में बेहतर दाम।
- डेयरी व्यवसाय अधिक लाभकारी।

निष्कर्ष:

दूध दोहन की उचित एवं वैज्ञानिक विधि अपनाने से किसान न केवल दूध की गुणवत्ता और मात्रा में उल्लेखनीय वृद्धि कर सकते हैं, बल्कि अपने पशुओं को थनैला जैसे दुग्ध जनित रोगों से भी प्रभावी रूप से सुरक्षित रख सकते हैं। स्वच्छ वातावरण, साफ हाथ एवं बर्तन, समय पर और पूरी दुहाई पशुओं के स्वास्थ्य को बेहतर बनाए रखती है तथा दूध को अधिक शुद्ध और सुरक्षित बनाती है। नियमितता और सही तकनीक से किया गया दूध दोहन डेयरी प्रबंधन को सुदृढ़ करता है, जिससे किसानों को बेहतर मूल्य, अधिक आय और दीर्घकालीन लाभ प्राप्त होता है। वास्तव में, स्वच्छता, नियमितता और वैज्ञानिक विधि ही एक सफल, टिकाऊ और लाभकारी डेयरी व्यवसाय की सच्ची कुंजी है।

"सही दोहन – स्वच्छ दूध – स्वस्थ पशु – समृद्ध किसान"

संपादक:

निर्मल सिंह दहिया, निदेशक प्रसार शिक्षा

योगेन्द्र सिंह जादौन, उप–निदेशक, प्रसार शिक्षा

प्रकाशक:

प्रसार शिक्षा निदेशालय

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

Folder : PN/79/FFPF-2/2026/DEE/BASU-Patna

दूध दोहन की उचित विधि

योगेन्द्र सिंह जादौन, प्रज्ञा भदौरिया, निर्मल सिंह दहिया एवं जय प्रकाश गुप्ता

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR), नई दिल्ली के फार्मर फर्स्ट प्रोग्राम के अंतर्गत प्रकाशित

प्रसार शिक्षा निदेशालय

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

दूध दोहन की उचित विधि

दूध दोहन डेयरी प्रबंधन की सबसे महत्वपूर्ण क्रिया है, क्योंकि दूध की मात्रा और गुणवत्ता दोनों ही सीधे दोहन विधि पर निर्भर करती हैं। अनुचित दोहन से दूध की हानि, थनैला (मैस्टाइटिस) रोग, दूध की खराब गुणवत्ता तथा किसान की आय में कमी हो सकती है। इसलिए स्वच्छ, नियमित और वैज्ञानिक ढंग से दूध दोहन करना अत्यंत आवश्यक है।

उचित दूध दोहन का महत्व

- दूध की गुणवत्ता एवं शुद्धता बनाए रखने में सहायक।
- थनैला जैसे दुग्ध जनित रोगों से बचाव।
- पशु को दर्द व तनाव से बचाना।
- दूध उत्पादन में वृद्धि।
- दुग्ध सहकारी समितियों में दूध की स्वीकार्यता।
- किसानों को बेहतर मूल्य प्राप्त होना।

उचित दूध दोहन के पूर्व की तैयारी

दूध दोहन से पूर्व की तैयारी

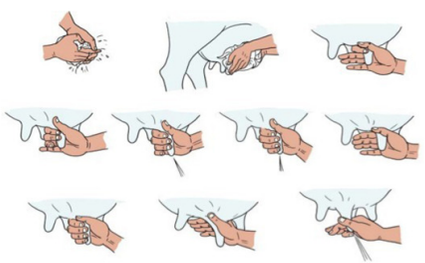

(क) दोहन करने वाले व्यक्ति की स्वच्छता

- दोहन से पहले हाथ साबुन से अच्छी तरह धोएँ।
- नाखून छोटे व साफ रखें।
- साफ और सूखे कपड़े पहनें।
- बीमार व्यक्ति दूध दोहन न करें।

(ख) पशु की तैयारी

- पशु को शांत वातावरण में बाँधें।
- थनों को स्वच्छ एवं गुनगुने पानी से धोएँ।
- साफ कपड़े या तौलिये से थन सुखाएँ।
- पहले 2–3 धार दूध अलग बर्तन में निकालें।
- थनों में सूजन, घाव या दर्द की जाँच करें।

दूध दोहन की सही विधि

(क) पूरी मुट्ठी विधि (Full Hand Method)

- अंगूठा और तर्जनी से थन के ऊपरी भाग को बंद करें।
- शेष उँगलियों से धीरे–धीरे दबाव डालते हुए दूध निकालें।
- थन को खींचना या मरोड़ना नहीं चाहिए।
- यह विधि सबसे सुरक्षित और वैज्ञानिक मानी जाती है।

(ख) गलत विधियाँ (न अपनाएँ)

- चुटकी विधि (Strip Method)।
- थन खींचकर या मरोड़कर दूध निकालना।
- असमान दबाव डालना।

मिल्क केन

दूध दोहन के समय सावधानियाँ

- रोजाना निश्चित समय पर दोहन करें।
- दिन में कम से कम दो बार दोहन करें।
- दोहन के समय पशु को चारा दें।
- दोहन के दौरान शोर या डराने से बचें।
- अधूरा दोहन न करें।

दूध दोहन के बर्तन एवं उपकरण

- स्टेनलेस स्टील या एल्युमिनियम के बर्तन प्रयोग करें।
- प्लास्टिक या जंग लगे बर्तनों से बचें।
- हर बार उपयोग के बाद बर्तनों को गर्म पानी से धोएँ।
- बर्तनों को धूप में सुखाएँ।

दूध दोहन के बाद की क्रियाएँ

- थनों को एंटीसेप्टिक घोल से साफ करें।
- पशु को तुरंत लेटने न दें (कम से कम 30 मिनट)।
- दूध को साफ कपड़े या छलनी से छानें।
- दूध को ठंडी व साफ जगह पर रखें।

मशीन द्वारा दूध दोहन (यदि उपलब्ध हो)

- मशीन साफ और कीटाणुरहित हो।
- सही वैक्यूम प्रेशर बनाए रखें।
- मशीन का रख–रखाव नियमित करें।
- प्रशिक्षण लेकर ही मशीन का उपयोग करें।

दूध दोहन में होने वाली सामान्य गलतियाँ

- गंदे हाथों से दोहन।
- थन धोए बिना दूध निकालना।
- प्लास्टिक के बर्तन प्रयोग करना।
- बीमार पशु का दूध मिलाना।
- अनियमित समय पर दोहन।

मिल्किंग मशीन